नाको ने ट्रेनिंग माड्यूल फॉर मेडिकल आफिसर में साफ साफ लिखा कि त्वचा यदि सलामत रहे तो वह एच.आई.वी. संक्रमण की दृष्टि से विश्वसनीय बाधक है परंतु म्युकस मेम्ब्रन यदि सलामत भी हो तो वह विश्वसनीय बाधक नहीं है (Reliable Barrier) यहाँ यह बताना मुनासिब होगा कि हमारे मुँह आँख, नाक, योनि, गुदा, शिष्ण आदि की अंदरूनी सतह को म्युकस मेम्ब्रेन कहते है हमारे मुँह के छाले इसी म्युकस मेम्ब्रन में हुए छोटे बड़े छिद्र होते है नाको ने स्पष्ट लिखा है कि शरीर द्रव दुसरे व्यक्ति के रक्त और म्युकस मेम्ब्रेन में आता है तो संक्रमण संभव है इसका अर्थ यह हुआ कि गीला चुम्बन या प्रगाढ चुम्बर संक्रमण कर सकता है स्मरण रहे कि नारो के मुताबिक रक्त, वीर्य, योनिद्रव और गुदा में वायरस अधिक संख्या में होते है परन्तु लार, पसीने व आँसू में कम संक्ष्या में होते है

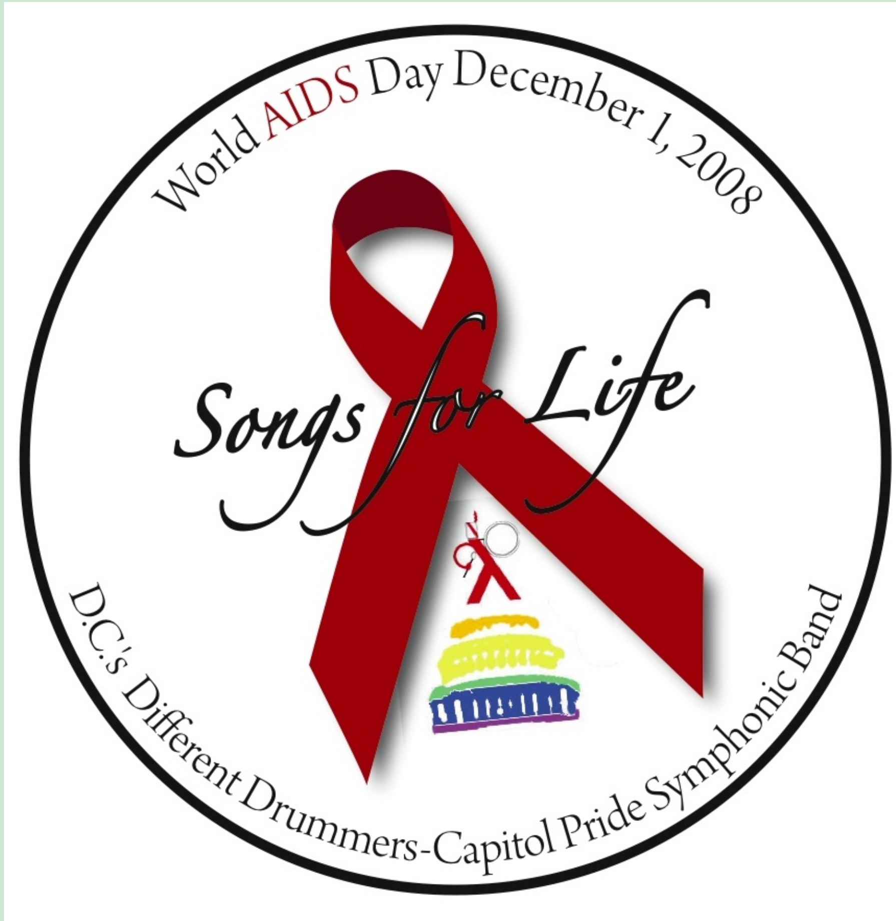

यह बताना यदि जरूरी है कि हाथ मिलाने, एक साथ भोजन करने, एक ही घड़े में पानी पीने, एक ही बिस्तर और कपड़े का प्रयोग करने तथा बच्चों के साथ खेलने से यह रोग नहीं फैलता है. मच्छरों या खटमलों के काटने से, हस्तमैथुन से, स्वीमिंग पुल में नहाने से, टेलीफोन करने से भी रोग नहीं फैलता है तो व्यापक जनहित में यह भी बताना जाना चाहिये कि चुम्बन से एड्स फैलता है और कंडोम पुरी तरह निरापद नहीं है, इसकी असफलता की दर अत्यधिक है.

जीवन्त सम्पर्क में सतत रहते हैं. निश्चित रूप से वे यही बात इनको बताते होंगे, जिनके मुँह में कुपोषण और उपरोक्त तमाम कारणों में से किसी-न-किसी के कारण दरार, छाले, खराख पाए जाने की संभावना सर्वाधिक रहती है. क्या इस बात को नाको के नीति-निर्धारक वरिष्ठ अधिकारीगण नहीं जाते है .

स्वास्थ सेवाओं को विस्तार देने वाली दूसरे स्तर पर आती है परिचारिकाएं (नर्सेस) इनकी प्रशिक्षण-संदर्शिका के पृष्ठ ६ पर चुम्बन के विषय में जो कुछ लिखा है वह कितना दिग्भ्रमित करने वाला है, यह भाषा से ही स्पष्ट है कि- साधारण चूमने से एच.आई.वी. संक्रमण नहीं होता, अधिकांश वैज्ञानिक का यह मानना है कि अधिक समय तक लिए गए चुम्बन से एच.आई.वी. संक्रमण संभव है, क्योंकि इसमे रक्त परस्पर सम्पर्क में ज्यादा रहता है, साधारणत: इसकी संभावना कम ही रहती है.

चूंकि परिचारिकाएं चिकित्सा- शास्त्र की पुस्तकों के संपर्क में रहती है. इसलिए उन्हें गोलमाल शब्दों में बात कही गई है.

चिकित्सकों को चूंकि अंधेरे में नहीं रखा जा सकता है इसलिए उन्हें ट्रेनिग माड्यूल्स (ट्रेनिंग माड्यूल ऑन एच.आई.वी. एण्ड फॉर मेडिकल ऑफिसर्स, नाको, नई-दिल्ली पृष्ठ क्रमांक-७) में लिखा है- " HIV is not transmitted by Dry Kissing" नाको, यूनेस्कों, यूनिसेफ और एन.सी.ई.आर.टी. ने शिक्षकों और छात्रों के लिये एक पुस्तक प्रकाशित की है लर्निंग ऑफ लाईफ जिसमें चुम्बन के बारे में लिखा है कि- तब तक कोई खतरा नहीं है, जब कि कि ऐसा करने वालों के मुँह से खून न आ रहा हो या उन्हें कोई कट न लगा हो और कोई घाव या खराश न हो.

" Deep Kissing : No risk as long as both the partners are not bleeding in the mouth or have no cuts and wounds or sores"

इसी पुस्तक के पृष्ठ क्रमांक ५७ पर लिखा है -" Oral Sex : Low risk, the risk increases if there are ulcers or cuts in the mouth"

उपरोक्त तमाम वैज्ञानिक तथ्यों तथा देश के भीषण बेरोजगारी, गरीबी और कुपोषण को ध्यान में रखते हुए सार्दी-जुकाम, नशाखोरी, चूने-कत्थे के पान, तम्बाकू सेवन, गुटका, पान-बहार, सुपारी तथा तेज-मिर्च मसालेदार पदार्ा खाने की आदतों एवं गरमागरम चाय काफीपीने की आदतों को ध्यान में रखते हुए मुंह में कट,दरार, छाले,खराश की संभावनाओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए और नाको का यह राष्ट्रीय और नैतिक कर्तव्य है कि चुम्बन के विरूद्ध में स्पष्ट जानकारी पहुंचाई जावे.

एक चिकित्सक, चिकित्सा शिक्षक और सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते मेरी दृष्टि में नाको का यह रवैया अत्यन्त खेदजनक और आपराधिक है कि वह तमाम सारी जानकारीयों तो विज्ञापनों आदि के जरिए स्पष्ट रूप से देता है, जिससे एच.आई.वी. संक्रमण नहीं होता है, मगर चुम्बन के मामले में चुप्पी देश के लिये, देश के सामाजिक ढांचे के लिए, नागरिकों के कितनी घातक हो सकती है, यह अकल्पनीय है. मेरी दृष्टि में एच.आई.वी./एड्स के तेज गति से विस्तार के लिए जानबूझकर साधी गई चुप्पी काबड़ा हाथ है, क्योंकि संभोग या यौन-सम्बन्ध के दौरान चुम्बन एक सहज स्वाभाविक और अनिवार्य-सी क्रिया है. यहाँ तक कि बिना यौन संबंध स्थापित किए भी प्यार जताने के लिए अक्सर चुम्बनों का आदान-प्रदान होता है.

भारत देश में हिन्दु और मुस्लिम धर्मावलम्बियों की संख्या ९० प्रतिशत से अधिक है और दोनों और दोनों धर्मो के धर्मगुरू और माता-पिता संयम की शिक्षा देते हैं और व्यभिचार को पाक/नापाक मानते हैं. ऐसी स्थिती में संयम की बजाय कंडोम का जोर-जोर से प्रचार करने पर रोक लगाई जानी चाहिये अथवा नाको को यहबताने का निर्देश दिया जावए कि राष्ट्रीय स्तर और विकसित देशों में यौनजनित संक्रमणों के मामले में कण्डोम की असफलता दर (फैल्युअर रेट) कितनी है.

According to obstetrician Joe S. Mcilhaney Jr., founder of the medical institute for sexual health, not only condoms have a higher failure rate for preventing STDs, but they also lhave a high failure rate for preventing pregnancy. A study by researcher Susan C. Weller found that condoms failed to prevent pregnancy up to 13 percent of the time and failed to protect against AIDS and other STDs 31 percent for the time. Mcilhaney adds that many married couples do not use condoms correctly, so it is unlikely that enexperienced teens could do so (http://soc.enotes.com/sexeducation-article//print)

सुसान सी वेलर ने अपने अध्ययन में पाया कि एड्स आदि रोगों के मामले में कण्डोम की असफलता की दर ३१ प्रतिशत है. ऐसी स्थिती में कंडोम को पूर्णत: निरापद बताना भी पूरी तरह से गलत प्रचार है. यह विकसित और शिक्षित देश की स्थिती है तो हमारे देश में अशिक्षा, गरीबी और नशे के प्रचलन के चलते स्थिति कितनी बदतर होगी, सहज कल्पना की जा सकती है.

यह बताना यदि जरूरी है कि हाथ मिलाने, एक साथ भोजन करने, एक ही घड़े में पानी पीने, एक ही बिस्तर और कपड़े का प्रयोग करने तथा बच्चों के साथ खेलने से यह रोग नहीं फैलता है. मच्छरों या खटमलों के काटने से, हस्तमैथुन से, स्वीमिंग पुल में नहाने से, टेलीफोन करने से भी रोग नहीं फैलता है तो व्यापक जनहित में यह भी बताना जाना चाहिये कि चुम्बन से एड्स फैलता है और कंडोम पुरी तरह निरापद नहीं है, इसकी असफलता की दर अत्यधिक है.

नाको के मार्गदर्शन में कार्यरत दिल्ली स्टेट कन्ट्रोल सोसायटी द्वारा जारी हैण्ड बुक फॉर टीचर्स में समलैंगिकता के विषय में लिखा है कि-" This is a personal preference of individuals and should not be viewed in a negative manner." वास्तविकता यह है कि स्वस्थ व्यक्ति की गुदा में ही लाखों की संख्या में बैक्टीरिया मौजूद रहते हैं वे लिंग के जरिए मूत्र तंत्र और गुर्दो को संक्रमित कर सकते हैं. संक्रमण जानलेवा भी हो सकता है, ऐसी स्थिती में गुदा मैथुन के खतरों को स्पष्ट रूप से जगजाहिर करना चाहिये. हमारे संविधान में आत्महत्या को अपराध माना गया है जबकि वह भी व्यक्तिगत प्राथमिकता का मामला है. रोगकारी गतिविधि के विषय में जनता को चेतावनी देना स्वास्थ्य सेवा से जुड़ी संस्थाओं का प्राथमिक कर्तव्य है न कि उसे व्यक्तिगत मसला बताकर, परोक्ष रूप से सहमति जताना. ऐसी स्थिती में नाको तथा सभी राज्यों की एड्स कन्ट्रोल सोसायटीज को यह निर्देशित किया जाए कि वे चुम्बन, कण्डोम, मुख मैथुन और गुदा मैथुन तथा एच.आई.वी./एड्स के अन्तर्सम्बन्धों को सामान्य भाषा में जन-जन तक पहुँचाए.

यह शर्मनाक, दर्दनाक और अफसोसजनक बात है कि तक्षशिला व नालंदा विश्वविघालयों और सांदीपनि गुरूकुल के इस देश में ज्ञान के मंदिरों यानी विश्वविघालयों में कंडोम वेंडिंग मशीनें लगाई जा रही है. इसी तर्ज पर पुण्य भूमि भारत के बाजारों में, जहाँ माता-बहनें और छोटे-छोटे लड़के-लड़कियाँ घर के छोटे-मोटे सामान खरीदने का काम निपटाते हों, वहाँ सरेआम कंडोम वेडिंग मशीने लगाने का विचार ही देश की सांस्कृतिक, नैतिक और सामाजिक ढाचे को तहस-नहस करने जैसा कृत्य है.

यदि नाको इस वैज्ञानिक तथ्य को प्रचारित करे कि डीप किसिंग और वेट किसिंग से एड्स का संक्रमण संभव है तथा कण्डोम की फैल्युअर रेट काफी ज्यादा है तो आम जनता एड्स जैसे भयावह रोग से बचने के लिये संयम के प्रति ज्यादा आस्थावान हो जाएगी.